ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(12): 288-294
www.allresearchjournal.com
Received: 19-11-2022
Accepted: 15-12-2022

शिवओम हरि
शोध छात्र, संस्कृत विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
शिवओम हरि
शोध छात्र, संस्कृत विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

ऋग्वैदिक कालीन प्राकृतिक पर्यावरण

शिवओम हरि

प्रस्तावना

वेदों का अध्ययन कर मानव अपने जीवन की सार्थकता को भली भांति समझ कर सकता है । और वेदों के अध्ययन से ही मानव जीवन में व्यक्तिगत गम्भीरता और विचारों में पवित्रता आती है । आज के समय में व्यक्ति अधिक से अधिक स्वार्थी होकर आगे बढ़ने का प्रयास करता रहा है यह उसके जीवन की लिए उतना ही घातक है । इसका कारण यह है कि मानव की इस दोहन प्रवृति ने ही पर्यावरण में अंसुलन पैदा करने की स्थिति को प्रोत्साहित किया है । सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेदों में सम्पूर्ण प्रकृति को देवता स्वरूप माना गया है । सभी का आवाहन ऐसे यज्ञ को सम्पूर्ण करने के लिए किया गया जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण पर्यावरण को शुद्ध करके प्राणी जगत की रक्षा करने व समस्त मानव समुदाय का उत्थान व कल्याण की भावना से किया गया है । वेदों में पर्यावरण चेतना की ओर ध्यान आकर्षित किया जाए तो वहां यह स्पष्ट हो जाता है कि सम्पूर्ण वेद ही पर्यावरण से युक्त है । कितने व्यापक ढंग से प्रकृति के सम्पूर्ण अङ्गों की स्तुति की गई है । आधुनिक समय में स्तुति करना तो दूर उसके विषय में जानने की इच्छा तक नही है । ध्यातव्य है कि वेदों में वृक्षों, पशुओं, वनस्पति, नदी, पर्वत, जल, वायु, सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा, उमा, पूजा आदि की स्तुति कर सम्पूर्ण जगत की रक्षा करने के लिए विधिवत् ढंग से उनको देवता मानकर उनका आवाहन किया गया है । और उनका विधिवत तरीके से आदर सत्कार भी किया गया है ।

वेद में पर्यावरण चेतना को दुष्टिपात करें तो पाएंगे कि प्रकृति की स्तुति अनेक प्रकार से की गई है । ऋग्वेद में कितना सुन्दर वर्णन गोदोहन करने वाले का गौमात व उसके मीठे दूध का किया गया है- "सुरुपकृत्नुमूतये सुदुधामिव गोदुहे । जुहूमसि द्यविद्यवि[१]" अर्थात गोदोहन करने वाले के द्वारा प्रतिदिन मधुर दूध प्रदान करने वाली गाय को जिस प्रकार बुलाया जाता है उसी प्रकार हम अपने संरक्षण के लिए सौंदर्यपूर्ण यज्ञ कर्म सम्पन करने वाले इन्द्र देव का आवाहन करते हैं । एक और उपमा में देखिए तो कितना सुन्दर दृश्य सामने आता है जहां पशु को देव सदृश माना गया है । निम्नलिखित पंक्ति को दृष्टिपात करने पर सुन्दर समन्य प्रस्तुत होता है - "इमां या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीद्धदा मनसा चिदिन्द्रम[२] अर्थात हे मनुष्यों! गौयें ही इन्द्ररूप है । उन्हीं इन्द्र को हम श्रद्धा के साथ पाना चाहते हैं । वर्तमान युग में अश्व (घोड़े) आजीविका का साधन हैं, मनोरंजन का साधन हैं । आवागमन का भी सस्ता और सरल साधन है । पशुओं के प्रति वेदों में अत्यधिक सम्मान का भाव प्रकट किया गया है जो देखते ही बनता है ।

ऋग्वेद के अध्ययन से हमें यह ज्ञात होता है कि देवताओं को भी पशु, पक्षी, पुरुष आदि बहुत प्रिय थे तभी तो देवताओं का आवाहन करते हुए उनकी सवारी का भी पूरा ध्यान रखा जाता था ।

"अ त्वा वहन्तु हरयो वृषणं सोमपीतये । इन्द्र त्वा सूरचक्षसा"[३]

अग्नि और पशु प्रेम को ऋग्वेद में कितने सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है जो मनः चित्ता को आच्छादित कर देता है –

तद्भद्रं तव दंसना पाकाय चिच्छदयति । त्वा यदग्ने पशवः समासते समिद्धमपिशर्वरे[४] ।

अर्थात हे अग्निदेव । जब रात्रि में आप प्रज्वलित होते हैं । पशु भी आकर आपके समीप बैठते है । आपका मह कल्याणकारी कर्म बालवत अज्ञानी को भी पूजादि के लिए प्रेरित करता है। ऋग्वेद में घोडे की तुलना असिदेव से की गई है जो अपने आप में एक बेजोड़ समय हैं:-

प्रोथदश्वो न यवसेडविव्यन्यदा महः संवरणाद्व्यस्थाता आदस्य वातो अनु वाति शोचिरथ समते ब्रजनं कृष्णमस्ति ।[५]

अर्थात हिनहिनाते घोडे जिस प्रकार घास को चरते चले जाते हैं उसी प्रकार दावानल वृक्षों को उदरस्थ करता हुआ चलता है, इस अवस्था में वायु के प्रभावों से जिस ओर काला धुआं आता है वही मार्ग अग्निदेव का होता है। ऋग्वेद में पशुओं का जो महत्व प्रतिपादित किया गया। वह अत्यन्त मिल पाना दुर्लभ है क्योंकि पशुओं को धार्मिक सांस्कृतिक महत्व देकर उनकी उपयोगिता बतलाई गई है, पशु हमारे लिए भव्यन्त आवश्यक है । ये सर्वविदित है कि सम्पूर्ण भूमण्डल पर रहने वाले सभी जीव जन्तु एक दूसरे पर आश्रित है और एक दूसरे से ही उनकी दैनिक जीवन की आवश्यक्ताओं को पूर्ती होती है इसलिए पशुओं का संरक्षण जरूरी है और पर्यावरणीय दृष्टि से पशुओं को लुप्त होती जा रही जाति प्रजातियां एक चिंता का विषय है | आज व्यक्ति भले ही इस विचार धारा में प्रवाहित हो रहा हो कि पर्यावन की रक्षा करना क्या सिर्फ मेरा कर्तव्य है और भी व्यक्ति तो है, संसार में सभी को ध्यान में आएगा तभी हम सोचेंगे ऐसा सोचकर गम्भीरता को नजर अंदाज करते हुए व्या निजी स्वार्थों में लगा हुआ है अपनी स्वयं की उत्पति के लिए कितना पीछे छूट रहा है इस बात का मनुष्य को भी कुछ भान तक नहीं है । क्या सिर्फ दो प्यार पशुओं को पालतु बना लेने से सम्पूर्ण पशु जगत की सुरक्षा हो गई नहीं ये तो सिर्फ मनोरंजन का साधन मात्र बन गए समय पास करने का एक अवसर मात्र गए कुत्ता, बिल्ली, खरगोश के पालने मात्र से पर्यावरणीय सुरक्षा नहीं हो जाती हम सभी को प्रत्येक लुप्त हो रही पशुओं की जाति प्रजाति को बचाना होगा और उसी प्रेम को उसी ममत्व को उसी धार्मिक दृष्टि को अपनाना होगा जो प्राचीन ग्रन्थो में वर्णित है जैसे की प्राचीन समय में उनको ध्यान रखा जाता था । आधुनिक विचारधारा से परे प्राचीन समय के व्यक्तियों के अंदर सिर्फ कुत्ता बिल्ली खरगोश को नही पालने का दृष्टिकोण ही नहीं वरन वे सभी पशुओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाते थे वे कई प्रकार के पशुओं जैसे गाय भैंस बैल बकरी, घोडा, भाल बंदर हाथी, बकरा, आदि को पालते थे । कवि लेखक आदि उपमाए देते आए हैं कि वेद में ऐसा किया गया है –

सहस्त्रभृङ्ने बृषभो यः समुद्रादुदा चरत् । तेना सहस्मेना वयं नि जनान्स्वापयामसि'[६]

अर्थात सहस्त्र श्रृंगो (रश्मियों) वाला वृषभ (वर्षा करने वाला सूर्य समुद्र से ऊपर आ गया है । शत्रु का पराभव करने वाले उन (सूर्य) के बल से हम (स्त्रोतागण) सबको सुख से शयन करा देते है । ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिस वृषभ पर जोर डाला गया है कि उसी प्रकार मेढक भी गौ और बकरे के समान ध्वनि करने वाला है | बकरे की उपमा देकर कितनी महत्वपूर्ण बात कही गई है-

गोमायरदादजमायुरदात्पृश्निरद्धरितो नो बसूनि ।
गवां मण्डूका ददतः शतानि सहस्त्रसावे प्रतिस्र आयु[७] ।।

याद आज हम वैदिक युग का अध्ययन करें तो आज मनुष्य ही नही सभी जीव जन्तु को भी अपने अपने अस्तित्व को लेकर चिन्ता है । और इस समस्या का समाधान खोजने में सम्पूर्ण जगत् लगा हुआ है और सभी का कर्त्तव्य है कि हम अपने निजी स्वार्थी को त्यागकर लोक कल्याण की भावना को अपनाकर ऐसी जटिल समस्या का समाधान करें । शेर जो जंगल का 'राजा होता है माँ जगदम्बा की सवारी होता है ऐसे जीव जनुओं का उल्लेख वेदों में औचित्यपूर्ण ढंग से किया गया है । ऋषि घोषाकाक्षीकती देवता अश्विनी कुमार की आकांक्षा किस प्रकार करती उसका उदाहरण देकर उन्होंने किस प्रकार अपने मनोभावों को प्रकट किया है इस ऋचा के माध्यम से ही समझा जा सकता है –

युवा मृगेव वारणा मृगव्यवों दोषा वस्तोर्हविषानि हयामहे
युवं होत्रामृतुथा जुहृते नरेषं जनाय बाध्यः शुभस्पती ।[८]

अर्थात हे अश्विनी कुमारो! जैसे व्याथ, हाथी और शेर की आकांक्षा करते हैं वैसे ही हम आपको रात-दिन हविद्रयों के साथ आवाहित करते हैं । हे उत्तम नायको! आपके निमित्त यथाकाल यजमान साधक आहुतियां समर्पित करते हैं, आप दोनों मनुष्यों के लिए अन्नादि प्रदान करते हैं । आप कल्याणकारी उद्देश्यों के स्वामी हैं । यहां पर विचार करने योग्य बात यह कि यहां घोषाकाक्षीकती अश्विनी कुमारों से इसलिए आकांक्षा रखी है कि वे कल्याणकारी उद्देश्यों के स्वामी है जो मनः शक्ति देते हैं | पर्यावरण का कोई भी ऐसा अंग नही है जिसका वर्णन वेद मे न मिलता हो तो पशु पक्षी जीव जन्तु संजीव निर्जीव सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है आखिर वेद सम्पूर्ण ज्ञान का भण्डार है ।
हमारा यह शरीर पञ्चतत्व अग्नि, जल, पृथ्वी, आकाश, वायु से बना है ऐसा माना गया है । परन्तु वर्तमान समय में ये सभी प्रदुषण के घेरे में हैं और इनकी शुद्धि करना परमावश्यक है । प्राचीन समय के ऋषि मुनि ज्ञानी पुरुष आदि इनकी नित्य उपासना करते थे और उनको देवता स्वरूप मानकर उनकी स्तुति कर सबकी रक्षा करने के लिए उनकी पूजा अर्चना किया करते थे । परन्तु आज ऐसा नही है यदि यदा कदा यत्र तत्र ये सब देखने को मिल जाए तो इसे या तो एक अपवाद को श्रेणी में लाकर रख देंगे या फिर इसे ढोंग पाखंड अंधविश्वास "माना लिया जाता है जो बहुत अनुचित है जब हम किसी की भी कीमत न समझेंगे तब तक उसकी उपेक्षा कर हानि ही पहुँचाते रहेंगे । और उससे होने वाले लाभों से वचित रहेंगे इस आज्ञानता को आधुनिकता की परिधि में मानना सर्वथा अनुचित है|
ऐसा वैज्ञानिकों को मानना है कि ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि वेदों जैसी महान धरोहर को नवीनयुग की पीढ़ी को सौंपकर उन्हें ज्ञानमय कर उनके जीवन का उद्धार करना होगा आज फिर वेदों में आए वायु, अग्नि, गगन, पृथ्वी, जल जैसे दावों की स्तुति करनी होगी वायु को देवस्वरूप मानकर उसकी इस प्रकार स्तुति की गई है|
सरोवरों में मेंढकों की तार-तार की आवाज बड़ी सुहावनी लगती है । प्रकृति के सूक्ष्म पर्यवेक्षकों का कहना है कि मेंढक बारिश का पानी माँगने और बारिश की धाराओं से संतुष्ट होने के लिए संघर्ष करते हैं । इन दोनों ध्वनियों में स्पष्ट अन्तर है । वेदों में वेद पढ़ने वाले ब्राह्मणों का उल्लेख मांडूक के नाम से भी किया गया है । यास्क ने निरुक्त में मेंढक शब्द को निर्वचन के द्वारा इस प्रकार परिभाषित किया है-

मण्डुका मज्जनात् मदतेर्वा मोदतिकर्मणः, मन्दतेवां तृप्तिकर्मणः, मण्डयतेरिति वैयाकरणाः, मण्ड एषामोक इति वा[९] ।

मेंढक शब्द की उत्पत्ति 'मस्ज़' क्रिया से हुई है जिसका अर्थ है तैरना । झीलों के पानी में मेंढक डुबकी लगाते हैं, और वेदपाठी और व्रतधारी ज्ञान के स्वाद में । या मेंढक शब्द क्रिया 'मादी' से लिया गया है, जिसका अर्थ है आनंद, और क्रिया 'मंडा (मादी)',जिसका अर्थ है संतुष्टि । मेंढक वर्षा के जल में सुखी और तृप्त पैदा होते हैं और बरगद के वृक्ष ज्ञान की वर्षा में पैदा होते हैं या मेंढक 'मादी' धातु से बना है, जिसका अर्थ है आभूषण । मेंढकों की खाल सुशोभित है, और वेदों को पढ़ने वालों के मन वधुओं से सुशोभित हैं । दूसरे शब्दों में, मेंढक शब्द की उत्पत्ति 'माण्ड -ओक्स' के संयोजन से हुई है । मेंढकों के द्वारा वालू को एक झील के रूप में एक घर से सजाया जाता है, और वैदिक पाठक लेखनी से अपने घर या आश्रम की दीवारों पर लिखी ऋचाओं से सजाया जाता है । ऋग्वेद में एक साथ सुंदर मेंढकों के बोलने और वेदों को पढ़ने वाले ब्राह्मणों को दर्शाया गया है –

संवत्सर शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः । वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः ।।[१०]

और यह उस सूक्त का पहला मंत्र है- **"**ब्राह्मणा व्रतचारिणः" ब्राह्मणों ने व्रत लिया यहाँ लुप्त उपमा है । मेंढकों ने एक आवाज बोली जो बारिश में ली गई थी । यहाँ बारिश के आनंद में मेंढकों के शोर करने के वर्णन में रूपक के रूप में देखा गया है "रूपक के लिए भी यह कहा जा सकता है कि जो मेढ़क एक वर्ष से जमीन में सोए हुए थे क्योंकि उपवास करने वाली मेढ़क समाधि में सोए रहते थे, वे बारिश के मौसम में बारिश से संतुष्ट होने वाले शब्दों का उच्चारण करने लगे । जमीन पर, जैसे कि वे उपवास करने वाले ब्राह्मण थे, क्योंकि केवल उपवास करने वाले व्रतधारी ब्राह्मण ही बहुत लंबे समय तक समाधि में रह सकते हैं । यह मंत्र ब्राह्मणों के लिए भी समान रूप से सुंदर अर्थ प्रस्तुत करता है जो वेदों के शिक्षक हैं उस स्थिति में, 'मेंढक:' में लुप्त उपमा रूपक को स्वीकार किया जाना चाहिए । इसका अर्थ यह है कि जो ब्राह्मण एक वर्ष से मौन व्रत का पालन कर तपस्या में लगे हुए हैं, वे अब मेढ़कों की तरह वर्षा से तृप्त होने वाले वचन बोलते हैं और अपना मौन तोड़कर जोर से वेदों का पाठ करने में लगे हैं। व्रत

करने वाले ब्राह्मणों ने कहा कि व्रत रखने वाले ब्राह्मण अपने प्रिय के कहने पर एक वर्ष तक व्रत करते रहे ।

गोमायुरेको अजमायुरेको पृश्निरेको हरित एक एषाम् ।
समान नाम विभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाच पिपिशुर्वदन्तः[११] ॥

इस प्रकार वर्षा से संतुष्ट मेंढक जब ध्वनि करते हैं, तो कुछ गायों की तरह बोलते हैं और कुछ बकरियों की तरह इनमें से कुछ मेंढक नीले और कुछ हरे होते हैं । वे विभिन्न रूपों में 'मेंढक' के समान नामधारण करते हैं और अपनी आवाज को सभी दिशाओं में फैलाते हैं ।इसी तरह वेदपाठ में भी मंत्रों का प्रयोग करना चाहिए । इन वैदिक ब्राह्मणों में एक 'गोमायु' है जो गायों पर रहता है और बकरियों पर रहने वाले 'अजमायु' पर शोध करने वाला है । इनमें से कुछ सूर्य के रंग में सफेद हैं और कुछ गहरे रंग के हैं 'विरूपित', हालांकि विभिन्न गुणों के होते हैं यहाँ पर वेदपाठी ब्राह्मणों के गुणों की चर्चा है ना की रंग की , जो 'मेंढक' के समान रंगों से व्यक्त किए जाते हैं, और वेदों का पाठ करते समय, वे वेदों के शब्दों को हर जगह अपनी आवाज में सुनाते हैं । यहां श्लेष अलंकर देखने को भी देखने को मिलता है । स्पष्ट है कि यह वैदिक वर्णन काव्यात्मक भाषा में मेढक के समान उत्साह से वेदों को पढ़ने, उनका अध्ययन करने और शोध करने का संदेश देता है ।
ऋग्वेद में उषा के काव्यात्मक वर्णन से काव्य के सहृदय काव्य मर्मज्ञ मुग्ध हैं । वह दिन की पुत्री है, वह चिरकाल जीने वाली नार सुंदर युवती के रूप में वर्णित है । उषा और रात्रि सफेद और काले रंग की बहनें हैं, जो एक-दूसरे के पीछे पड़ी हैं वे एक दुसरे के अनन्तर आती जाती हैं अर्थात एक दुसरे का अनुसरण करने वाली हैं ।

एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि व्यच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः।
विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अद्येह सुभगे व्युच्छ ॥[१२]

देखो यह द्युलोक के स्वामी की पुत्री है । वह सफेद स्वच्छ वस्त्रों को धारण करने वाली है । वह पूर्व की दिशा में जो युवती के सामान दिखाई देती है वह पृथ्वी के समस्त धन की स्वामिनी है । हे सौभाग्यशाली, उषाकाल की देवी तुम मुझे प्रतिदिन ऐसे ही दर्शन दो –

उदीर्ध्वं जीवो असुन आगादप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति ।
आरैक् पन्थां यातवे सूर्यायागन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः [१३]। ।

जागो, भाइयों, जीवन देने वाली सांस हमारे पास आ गई है । घना अँधेरा मिट गया है, और उजाला हो रहा है । देवी उषा ने सूर्य के यात्रा करने का मार्ग प्रशस्त किया । हम उस स्थिति में भी पहुंच गए हैं जहां लोग प्रकाश को अपना मानकर अधिक समय तक जीवित रह सकते हैं । यह स्वर्ग की पुत्री है, और उसने अपने सामने प्रकाश देखा । वह सत्य के मार्ग का अनुसरण करती है, जैसे कि वह इसे अच्छी तरह से जानती हो –

एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ॥[१४]

देखो, यह प्रकाश देने वाली दिन की कन्या, कुलीन देवी उषा, भोर से पहले प्रकट होती है । यह सत्य के मार्ग पर चलती है । यह एक सुंदर स्त्री है जो बुद्धिमान है और अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं करती है । विषयों के ये चित्रण समाज में महिलाओं के लिए विशेष संदेश देते हैं । भोर के मुख से समाज में कवि यह इंगित करना चाहता है कि महिलाओं को उज्ज्वल कपड़े पहनने चाहिए । धनी होना चाहिए । एक अच्छा मस्तिष्क वाला होना चाहिए । ज्ञान और सदाचार से प्रकाशित होना चाहिए । अपने परिवार और समाज से अंधकार को दूर करना चाहिए और गरिमा का पालन करना चाहिए ।

सूर्योदय से जीवन की कल्पना

ऋग्वेद में सूर्योदय की एक चमत्कारी कल्पना की गई है । रात अँधेरे से ढकी हुई है । सूरज की किरणें सौर मंडल में स्थिर हैं वे हमारे बीच धरती के अँधेरे को कैसे सहन कर सकती हैं । प्रिय बुद्धिमान सुपर्ण सूर्य किरणों से याचना करते हैं कि आपने हमें अपने वक्ष में कारागृह की तरह कैद कर रखा है, ताकि हम तेजस्वी होते हुए भी पृथ्वी का भ्रमण न कर सकें । हे सूर्य जो ऋषि आपको प्रिय हैं और जो आपसे हीन नहीं हैं, जो गरुड़ की आयु प्राप्त कर चुके हैं ।

वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्र प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः ।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्वि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान् निधयेव बद्धतरान् [१५]॥

इस मन्त्र में अलंकार अलंकार की किरणों में रूपक अलंकार का चमत्कार और ऋषित्व का गुणदेखने को मिलता है । किरणों को चेतना का श्रेय देकर बंधनों से मुक्ति के लिए प्रार्थना करने में भी बड़ी रुचि है । यह वर्णन गुरुकुल के छात्रों के साथ भी होता है । उन्होंने वेदों का अध्ययन करते हैं और बुद्धिमान ऋषि बनते हैं । हालाँकि, शिक्षक उनका समावर्तन नहीं करते हैं और उन्हें स्नातक की उपाधि नहीं प्रदान करते हैं । वे सुपर्ण के समान हैं जो किसी भी विषय को कल्पना रूपी पंखों से ऊंची उड़ान भरने में समर्थ हैं । वे आचार्य के पास जाते हैं और निवेदन करते हैं, भगवान, आपकी कृपा से हमने बहुत कुछ सीखा है, फिर भी हम जाल से क्यों बंधे हैं हम पर दया करो । हमें बंधनों से मुक्त करें और हमें स्नातक की उपाधि प्रदान करें, ताकि हम संसार में व्याप्त अज्ञान के अंधकार को दूर कर सकें और आपकी कीर्ति फैला सकें । वेदों में सूर्य का वर्णन प्रकृति की अभिव्यक्ति में बड़ा ही चमत्कारी प्रतीत होता है । कुछ सुंदरता देखें । यह अद्भुत है कि देवताओं की सेना मित्र, अग्नि-देवता वरुण की आँखों से प्रकट हुई । जल, आकाश, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, ब्रह्मांड की आत्मा और जो कुछ भी चल रहा है, वह सब स्थिर है –

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा[१६] ॥

देखो, मित्र वायु द्वारा प्रकाशरूपी सूर्य-किरणों की अद्भुत और मनोरम सेना उठती है । वरुण के नेत्र जल, अग्नि आँख के द्योतक हैं । इस सूर्य ने अन्तरिक्ष, पृथ्वी और आकाश को भर दिया । सूर्य चल अचल जगत का जीवन दाता बन गया है । धन की परत की तरह चमकते हुए, सुनहरी जांघों वाला आकाश दूर से उगता है । निश्चित रूप से लोग सूर्य से पैदा हुए हैं, और वे काले पानी की तरह समृद्ध हैं ।

दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति दूरे अर्थस्तरणिर्भ्राजमानः ।
नूनं जनाः सूर्येण प्रसूता अयन्नर्थानि कृष्णवन्नपांसि[१७] ॥

स्वर्ग की देवी का स्वर्ण आभूषण, आकाश की नाव, यह चमकता हुआ चौड़ा-सा सूरज पूर्व में उगता है, इसका लक्ष्य दूर है । इस जगमगाते सूर्य से प्रेरित होकर मनुष्य निश्चय ही अपने उद्देश्य की पूर्ति में लगा हुआ है और अपने कर्तव्यों का पालन कर रहा है । यहाँ सूर्य उस नौका का स्वर्ण आभूषण है जो प्रात:काल से सायंकाल तक आकाश सागर में विचरण करती है । काव्यात्मक जाहिर है, यह है यह सूर्य संसार को आलोकित करता है।

रात्रि देवी का आगमन

जिस प्रकार वेदों में भोर का वर्णन एक युवती के रूप में किया गया है, उसी प्रकार रात्रि का वर्णन वैदिक काव्य में एक युवती के रूप में किया गया है । उस समय की सुंदर अनुभूति का वर्णन करते हुए वैदिक कवि कहते हैं–

आ प्रागाद् भद्रा युवतिरह्नः केतून्समीतर्सती ।
अभूद् भद्रा निवेशनी विश्वस्य जगतो रात्री [१८] । ।

एक अच्छी युवती पूर्व से आई, और दिन में सब जगह सूर्य की विकीर्ण किरणों को संहार कर रही है । रात पूरे ब्रह्मांड के लिए शुभ हो गई । देखो, यह रात रूपी युवती आई है । यह दिन में चारों ओर बिखरी हुई सूर्य की किरणों को अवशोषित कर लेती है । शुभ रात्रि, यह युवती पूरी दुनिया की चहेती बन गई है । रात के रूप में युवती का यह चित्रण एक महिला को सिखाता है कि उसे क्या करना चाहिए, जो कि दिन के दौरान आंगन में बिखरे कपड़ों को उठाना, दिन की गतिविधियों को समाप्त करना और आराम का स्रोत बनना है ।

वर्षा की प्रकृति -

ऋग्वेद के एक सूक्त में वर्षा के बारे में चारित्रिक कथन भी मनमोहक है जिस तरह रथ वाहक घोड़ों पर जूआ रखकर आगे चलने को प्रेरित करता है । उसी तरह पर्जन्य वृष्टि को सूचित कर करते हैं और पवन दूतों के द्वारा उसे आगे बढ़ाते हैं ।

रथीव कशयाऽश्वाँ अभिक्षिपन्नावितान् कृणुते वय अह ।
दूरात् सिंहस्य स्तनथा उदीरते यत् पर्जन्यः कृणुते वयं नमः[१९] । ।

जिस प्रकार एक सारथी अपने रथ की धुरी पर लगे घोड़ों को धकेलता है, उसी प्रकार वर्षा वायु के दूतों को वर्षा का संकेत देने के लिए भेजती है। जब विजली आसमान के बादलों को बारिश में बदलने के लिए गरजती है, तो शेर, यह सोचकर कि यह एक प्रतिद्वंद्वी की दहाड़ है, दहाड़ के साथ जवाब देता है । यहाँ पहले चरण का रूपक, प्रकृति की अभिव्यक्ति की बयानबाजी का हिस्सा होने के कारण एक चमत्कार पैदा करता है । हवाएँ चलती हैं और गिरती हैं, और बिजली जड़ी बूटियों से टकराती है और उन्हें पी जाती है ।

प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः ।
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत् पर्जन्यः पृथिवीं रेतसाविति[२०] । ।

वायु चलती है, बिजली चमकती है, जड़ी-बूटियाँ उगती हैं, आकाश बरसता है, और समस्त प्राणियों के लिए अन्न उत्पन्न होता है, जब आकाश अपने वर्षा रस से पृथ्वी को तृप्त करते हैं । यह भी प्रकृति का एक विशेष रूप से सुंदर कथन मिलता है अंधेरा दिन में भी बढ़ता है ।

सोम सूर्या रूपी शिशु –
पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशू क्रीडन्तौ परियातो अध्वरम् ।
विश्वान्यन्यो भुवनाभि चष्टे ऋतूंरन्यो विदधज्जायते पुनः[२१] । ।

पूर्व और पश्चिम की ओर चलने वाले बच्चे एक दूसरे के साथ खेलते हुए बलि की वेदी के पास से गुजरे । एक अन्य व्यक्ति पूरे ब्रह्मांड का निरीक्षण करता है, और दूसरा व्यक्ति ऋतुओं का निर्माण करता है, और दूसरा व्यक्ति फिर से जन्म लेता है । देखो, ये दोनों बालक एक दूसरे के पीछे-पीछे जादू-टोना, क्रीड़ा और यज्ञ करा रहे हैं । उनमें एक सभी लोकों को प्रकाशित करती है और दूसरा, ऋतुओं का निर्माण करते हुए, गुजर जाने के बाद भी बार-बार जन्म लेता है । जाहिर है ये बच्चे सूर्य और चंद्रमा हैं । ये दो दिन और रात के यज्ञ बच्चे द्वारा किए जाते हैं, सूर्य दुनिया को रोशन करता है, चंद्रमा प्रतिपदा को अक्षम पैदा होता है, और धीरे-धीरे बढ़ता है और पूर्णिमा पर पूर्ण शरीर वाला हो जाता है । यहाँ चन्द्रमा और सूर्य को शिशुओं के रूप मेंवर्णित करके वेद उस अतिशयोक्ति के सौंदर्य को प्रस्तुत करता है जिसे रूपक ने निगल लियाहै ।

मरुतों का काव्यमय वर्णन

मरुता एक काव्यात्मक वर्णन है महादेवों की दृष्टि से मरुत वे पवनें हैं जो वर्षा लाती हैं । वेदों के कवि कल्पना करते हैं कि वे बिजली की तेज हँसी से पैदा हुए हैं । कवि कालिदास ने अपनी कविता मेघदूतम् में कैलाश को शिव का निवास स्थान बताया है और शिव यहां प्रतिदिन हंसते हैं और कवियों द्वारा हंसी के रंग को सफेद माना गया है । कालिदास की कल्पना के इस सौंदर्य का स्रोत वेद प्रतीत होते हैं ।

हस्काराद् विद्युतस्पर्यंतो जाता अवन्तु नः । मरुतो मृडयन्तु नः[२२] ।

मरुतों के वर्णन के सन्दर्भ में रूपक से मिश्रित प्रकृति की एक शानदार अभिव्यक्ति भी मिलती है । बिजली गिरने पर गाय की तरह मां अपने बछड़े को दूध नहीं पिला सकती । वे दिन में वर्षा से मन को अन्धेरा कर देते हैं । यही वे पृथ्वी पर कर रहे हैं ।
जब मरुतों द्वारा उत्पन्न वर्षा होती है, तो वह एक उग्र गाय की तरह बिजली की तरह गर्जना करते हैं और बारिश जमीन पर आ जाती है जैसे गाय अपने बछड़े तक पहुंचती है । जब ये हवाएं पृथ्वी को वर्षा जल से भिगोती हैं तो दिन में भी अंधेरा कर देती हैं ।मरुतों का यह वर्णन मनुष्यों को शिक्षा देता है कि उन्हें भी संसार में आनन्द की वर्षा करनी चाहिए और घृणा या दुःख का झगड़ा नहीं करना चाहिए –

वाश्रेव विद्युन्मिमाति वत्सं न माता सिषक्ति ।
यदेषां वृष्टिरसर्जि । ।
दिवा चित् तमः कृण्वन्ति पर्जन्येनो दवाहेन ।
यत् पृथिवीं व्युन्दन्ति[२३] । ।

इस प्रकार हमने ऋग्वेद में प्रकृति के कुछ चित्रणों का संक्षिप्त चित्र प्रस्तुत किया है और फिर मनुष्य के लिए कौन है? मैंने यह भी देखा कि संदेश प्राप्त हो रहा था। हमें विश्वास है कि अनुकंपा पाठक निश्चित रूप से इन विवरणों से चकित होंगे और वेदोंकी काव्यात्मक प्रकृति की सराहना करेंगे।

संदर्भ

1. ऋग्वेद १.४ १.
2. ऋग्वेद संहिता भाग -१ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
3. ऋग्वेद संहिता भाग -१ मन्त्र-सूक्त – १६, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
4. ऋग्वेद संहिता भाग -२ मन्त्र ३, सूक्त – ९ – ७ पृष्ट – १८
5. ऋग्वेद संहिता भाग -२ मन्त्र ७, सूक्त – ३ – २ पृष्ट – ६
6. ऋग्वेद संहिता भाग -३ , मन्त्र ७, सूक्त – ५६ – ७ पृष्ट – ६५ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
7. ऋग्वेद संहिता भाग -३, मन्त्र ७, सूक्त – १०४ – १० पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
8. ऋग्वेद संहिता भाग – ४ , मन्त्र १०, सूक्त – ४० पृष्ट – ६८
9. निरुक्त - 9/5
10. ऋग्वेद ७/१०३

11. ऋग्वेद 7/103/6
12. ऋग्वेद 1/113/7
13. ऋग्वेद 1/113/16
14. ऋग्वेद 1/124/3
15. ऋग्वेद 10/73/11
16. ऋग्वेद 1/115/1
17. ऋग्वेद 7/63/4
18. सामवेद, 608
19. ऋग्वेद 5/83/3,
20. ऋग्वेद 5/83/4,
21. ऋग्वेद 10/85/18
22. ऋग्वेद 1/23/12
23. ऋग्वेद 1/38/89